लेख

सशक्त इरादे-मन में विश्वास
-मेरी कॉम

जुही

"मुझे आज भी याद हैं अपने पिता की कठोर हिदायत— इस टूटे-कटे, चोट-खाए चेहरे को लेकर कभी भी तुम शादी करने की उम्मीद मत करना।" ये शब्द कांगठेई गांव, मणिपुर की चैम्पियन मुक्केबाज़ी मांगते चुंगनेइजंग मेरी कॉम उर्फ़ एमसी मेरी कॉम के हैं। सन् 2000 में मेरी ने मुक्केबाज़ी की दुनिया में अपना पहला क़दम रखा। इस पुरुषों के अधिपत्य वाले खेल में उनकी दिलचस्पी उन्हीं के क्षेत्र के पुरुष मुक्केबाज़ दिंगको सिंह से प्रेरित है।

मेरी कॉम एक मध्यमवर्गीय परिवार में पली-बढ़ी हैं। अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के इरादे से उन्होंने खेलकूद को अपनाया। शुरूआत में मेरी कॉम लगभग सभी व्यायामों में हिस्सा लेती थीं परन्तु 400 मीटर दौड़ और भाला फेंकने में उनकी विशेष रुचि थी। बैंगकॉक में दिंगको सिंह ने जब मुक्केबाज़ी में स्वर्ण पदक जीता तो मणिपुर में जैसे एक आंदोलन आ गया। अनेकों युवा लड़के व लड़कियां खेलकूद में शामिल होने लगे। मेरी कॉम का रूझान भी मुक्केबाज़ी की ओर हो चला। वे कहती हैं, "मैने सोचा कोशिश करके देखती हूं। लगभग दो हफ़्तों में मैंने मुक्केबाज़ी से जुड़े बुनियादी गुर सीख लिये थे। शायद इस दुनिया में आने के लिए भगवान ने मुझे कोई विशेष हुनर दिया था।"

पहले पहल मेरी कॉम ने मुक्केबाज़ी का शौक अपने घरवालों से छुपाकर रखा। परन्तु जब सन् 2000 में उन्होंने राज्य की चैम्पियनशिप जीती तब अखबारों में छपे फ़ोटो ने उनका पर्दाफाश कर दिया। घरवालों की नाराज़गी इस बात से थी कि मुक्केबाज़ी को औरतों का खेल नहीं समझा जाता है। मणिपुरी समाज में औरतों का इस क्षेत्र में जाना वर्जित है। पर उनके चचेरे भाई-बहनों ने मिलजुलकर उनके माता-पिता को मना लिया।

अपना पहला सम्मान जीतने के बाद मेरी कॉम ने फर्स्ट स्टेट लेवल इंवीटेशन महिला चैम्पियनशिप, सेविन्थ ईस्ट इण्डिया विमेंस बॉक्सिंग चैम्पियनशिप-बंगाल भी जीती। सन् 2005 तक आते-आते उन्होंने पांच राष्ट्रीय चैम्पियनशिप भी हासिल कर लीं थीं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मेरी कॉम ने अनेकों सम्मान और स्वर्णपदक जीतकर अपने देश का नाम महिला मुक्केबाज़ी के क्षेत्र में रोशन किया है।

प्रेस कांफ़्रेस में बोलती मेरी कॉम

हिसार में द्वितीय एशियाई महिला चैम्पियनशिप और ताइवान में तृतीय एशियाई महिला चैम्पियनशिप जीतने के बाद मेरी कॉम के जीवन में जैसे स्वर्ण पदकों की बौछार ही लग गई।

सन् 2001 में तुर्की महिला मुक्केबाज़ हुल्या सहिन से हार जाने के बाद मेरी कॉम कुछ निराश सी हो गई। जी तोड़ मेहनत रंग लाई और अगले ही साल तुर्की में हुई द्वितीय

आइबा वर्ल्ड विमेंस सीनियर बॉक्सिंग चैम्पियनशिप में यूक्रेन और उत्तरी कोरिया की महिला मुक्केबाज़ों को हराकर उन्होंने स्वर्ण पदक जीते।

भारतीय सरकार ने सन् 2003 में मेरी कॉम को अर्जुन सम्मान प्रदान किया। मुक्केबाज़ी में देश का नाम आगे ले जाने के लिए यह सम्मान पाने वाली वह पहली भारतीय महिला बनीं।

सन् 2004 के बाद मेरी कॉम ने नॉर्वे की विश्व महिला चैम्पियनशिप, हंगरी में विच कप टूर्नामेंट (2004) एशियाई महिला बॉक्सिंग चैम्पियनशिप, फिलीपीन्स, रूस में तृतीय आइबा विमेंस वर्ल्ड चैम्पियनशिप्स, वीनस बॉक्स कप डेनमार्क (2006) आदि अनेकों खिताब जीते।

मेरी कॉम बताती हैं कि रूस की महिला मुक्केबाज़ों से जीतना उन्हें काफ़ी अच्छा लगा। उनकी तारीफ़ करते हुए पर उन्हें वह कहती है- "वे सब कितनी फिट हैं— सुडौल मांस पेशी वालीं।" इसके साथ ही वह जोड़ती हैं— "हमारी टीम ने बहुत मेहनत की थी। अपनी ज़मीन पर उनसे जीतने का सुख ही कुछ और है।"

किसी भी विश्व स्तरीय चैम्पियन की तरह मेरी कॉम का सपना है कि वह भारत का प्रतिनिधित्व ओलम्पिक खेलों में कर पायें। इसके लिये वह कड़ी मेहनत भी कर रही हैं। दिन में पांच से छः घंटे वह व्यायाम और प्रैक्टिस करती हैं। रिंग में अपनी रणनीति के तहत वह प्रतिद्वंदी को खूब भगाती हैं जिससे वह थक जाये। वह कहती हैं "शारीरिक बल व तकनीक के साथ-साथ मैं अपनी मानसिक शक्ति पर भी निर्भर करती हूं। अपनी कड़ी मेहनत और दृढ़ता की वजह से मैं खुद को इस क्षेत्र में स्थापित कर पाई हूं।"

मेरी कॉम की सफलता उनके दृढ़ निश्चय, काबलियत और इच्छा शक्ति का प्रतीक है। मुक्केबाज़ी से हुई कमाई से उन्होंने अपना घर और ज़मीन खरीदी है। कुछ पैसे बचाकर वह अपने भाई-बहनों की अच्छी देखभाल भी करना चाहती हैं।

"एक सफ़ल मुक्केबाज़ बनने के लिए एक मज़बूत दिल चाहिए। कुछ औरतें शारीरिक रूप से ताकतवर होती हैं पर उनका दिल कमज़ोर होता है। पर हम पुरुषों से ज़्यादा मेहनत करते हैं और अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपने देश को गौरवान्वित करते हैं। भगवान ने मुझे काबलियत दी है पर इरादों की मज़बूती से आज मैं इस मुकाम तक पहुंची हूं।"

मेरी कॉम के यही विचार उनकी जैसी तमाम लड़कियों को प्रेरित करते हैं जिनमें आगे बढ़ने की लगन है।

जुही जैन, *नारीवादी कार्यकर्ता व लेखिका हैं।*

आइबा विमेंस वर्ल्ड चैम्पियनशिप